लेखा·योग

132. स्वैच्छिक संगठनों की वित्तीय जवाबदेही - 4

Dec-06/ रा.मार्गशीर्ष १९२८: Released: फरवरी 2009

Accountaid™
Accounting for Aid. Aid in Accounting

इस अंक में

गैर जवाबदेही का इतिहास • खामी कहां है? पृष्ठ 1
एनपीओ उत्तरदायित्व का मॉडल? • जटिलता • रखरखाव लागतें पृष्ठ 2
उद्देश्य • सिर्फ आत्मा पृष्ठ 3

लेखा योग 131 से आगे...

गैर जवाबदेही का इतिहास

कॉरपोरेट इतिहास में, साउथ सी बबल (1694-1722 ई.) उत्तरदायित्व के क्षेत्र की शुरुआती विफलताओं में से एक थी। फलस्वरूप, ब्रिटिश सरकार ने कुछ ऐसे इंतज़ाम किये जिस से कि इस तरह की घटना दोबारा न घटे। उसी प्रकार, 1930 के दशक में आयी महामंदी से सबक सीखते हुए, अमेरीकी सरकार ने 1934 में यूएस सिक्योरिटीज़ ऐण्ड एक्सचेंज कमीशन का गठन किया। लेकिन समस्या है कि खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। हाल ही में एनरॉन घोटाले के बाद सरबेंस-ऑक्सले अधिनियम, २००२ बनाना पड़ा।

न्यू यॉर्कर[1] नामक पत्रिका के एक दिलचस्प लेख में, जॉन केसिडी ने कार्यकारी क्षतिपूर्ति और जवाबदेही के संबंध पर ऐतिहासिक दृष्टि से विचार किया है। 'दि ग्रीड साइकिल' नामक इस लेख का निष्कर्ष है कि प्रबंधकीय उत्तरदायित्व की समस्या का हर नया समाधान प्रबंधकों को उसी समाधान से बच निकलने के और भी रचनात्मक तरीके ढूंढने की प्रेरणा देता है।

व्यावसायिक उत्तरदायित्व के, चार सौ साल के इतिहास से हम क्या सबक निकाल सकते हैं? इस लंबे अनुभव का सबक बहुत सीधा है: कॉरपोरेट मॉडल विफलताओं की आशंका से मुक्त नहीं हो सकता।

इस मॉडल के पीछे लेखाकारों, विश्लेषकों, ऑडिटरों और नियामकों (Regulators) की एक पूरी फौज मुस्तैदी से लगी रहती है। इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कॉरपोरेट क्षेत्र हर साल बेहिसाब पैसा खर्च करता है। परंतु पानी की तरह पैसा बहाये जाने के बावजूद भी इसकी स्थिति में कोई सुधार दिखाई नहीं दे रहा है।

खामी कहां है?

तो फिर इस मॉडल में कमी कहां रह जाती है? कहना मुश्किल है लेकिन कारोबार जगत में एक शब्द चलता है 'आत्माहीन निगम' (Soulless Corporation)। शायद यह शब्द इस गुत्थी को सुलझा सके। कंपनी के पास न तो कोई आत्मा होती है और न ही कोई अन्तरात्मा। कंपनी को न तो पाप के तराजू में तौला जा सकता है और न ही वह कर्मों का संचय करती है। न ही उसे मोक्ष या मुक्ति की कामना होती है। वह तो बस सदा-सर्वदा के लिए मुनाफा बनाते

रहना चाहती है। और अब २००८ में फिर, बहुत से बैंक जहरीले ऋणों d शिकार बन गये हैं।

कभी-कभार सीईओ या प्रोमोटर निगम के हित के लिए पूरी आत्मीयता से काम करते हैं और कंपनी को अपनी आत्मा उधार देते हैं। लेकिन ज़्यादातर मामलों में कंपनी या निगम के दोष को किसी खास अधिकारी या प्रबंधक की ज़िम्मेदारी नहीं मानी जाती है।

अक्सर अन्तरात्मा के इसी हल्केपन की वजह से, कंपनियाँ कानून की हदों को पार कर जाती हैं और वो भी हिचकिचाहट महसूस किए बिना। बल्कि कुछ विशेषज्ञों का तो मत है कि अपने शेयरधारकों की संपन्नता को बढ़ाने के लिए कंपनी अपनी कानूनी सीमाओं के भीतर रहते हुए कुछ भी कर सकती है और उसे करना भी चाहिए। इसी सोच से प्रेरणा लेते हुए कंपनियाँ कानून के साथ आंख मिचौली खेलती हैं। अपने हितों की पूर्ति के लिए, कंपनियाँ अपने कानून और लेखांकन मानकों की पुनर्व्याख्या करने वाले विशेषज्ञों को भारी-भरकम फीस भी देती हैं।

[1] पृष्ठ 64-77, *दि न्यू यॉर्कर,* 23 सितंबर 2002.

www.AccountAid.net